अरस्तू का चतुष्कोटि कारणतावाद
(ARISTOTLE'S FOURFOLD CAUSATION)

अरस्तू ग्रीक दार्शनिक हैं। उनके अनुसार कारण और कार्य में अनिवार्य सम्बन्ध है। अरस्तू का कारणता सम्बन्धी विचार आमधारणा (Common sense view) से भिन्न है। आम धारणा के अनुसार कारण वह है जो किसी घटना को उत्पन्न करता है, और जो घटना उत्पन्न होती है वह कार्य कहलाती है। जैसे — बादल कारण है और वर्षा कार्य है। बादल से वर्षा होती है। जहर खाने से मौत होती है। इसलिए मौत कार्य है और उसका कारण जहर है। कारणकार्य की यह अवधारणा वैज्ञानिक अवधारणा से भी मिलती है। वैज्ञानिक अवधारणा यह बतलाती है कि कार्य की उत्पत्ति कारण से होती है, लेकिन यह नहीं बतलाती है कि क्यों उत्पन्न हुई है ? इस 'क्यों' का उत्तर कारणता की दार्शनिक अवधारण में मिलती है। *अरस्तू* का कारणता विचार 'क्यों' का उत्तर देता है ? *अरस्तू* किसी घटना की उत्पत्ति कैसे और क्यों होती है, का उत्तर देता है। इसलिए अरस्तू के अनुसार कारण वह है जिसमें हेतु सन्निहित होता है। कारण (cause) समय की दृष्टि से कार्य का पूर्ववर्ती है। हेतु (reson) तार्किक दृष्टि से कार्य का पूर्ववर्ती है। हेतु का समय की दृष्टि से पूर्ववर्ती होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि इसका सम्बन्ध प्रयोजन या लक्ष्य से होता है। कारण 'कैसे' का उत्तर देता है, हेतु 'क्यों' का उत्तर देता है। 'क्यों' शब्द से ही लक्ष्य या प्रयोजन का भाव लक्षित होता है। यही कारण है कि अरस्तू ने किसी घटना के मूल में चार कारणों को स्वीकारा है। अतः *अरस्तू के कारणता विचार को चतुष्कोटि कारणतावाद (Theory of Fourfold Causation) कहा जाता है।*

अरस्तू के अनुसार चार कारण हैं — उपादान (Material), निमित्त (Efficient), आकारिक (Formal) और अन्तिम या लक्ष्य (Final)। इनमें से प्रथम दो कारण 'कैसे' का उत्तर है, और अन्तिम दो कारण 'क्यों' का उत्तर है। *उपादान कारण वह है जो कार्य की उत्पत्ति के लिए कच्चे माल (raw materials) की तरह इस्तेमाल होता है। वह कार्य की सामग्री या उपादान (materials) है।* घड़ा बनाने के लिए मिट्टी का उपयोग होता है। लेकिन सोना का घड़ा बनाया जाय, तो उस घड़े का उपादान मिट्टी नहीं, वरन् सोना होगा। मिट्टी के घड़े का उपादान मिट्टी है। अतएव घड़ा का उपादान कारण मिट्टी या सोना है। इसी प्रकार विश्व, जो एक कार्य है, का उपादान कारण विभिन्न तत्त्वों (पृथ्वी, जल आदि) के परमाणु हैं।

उपादान कारण निष्क्रिय और जड़ होता है। अतएव उससे कार्य के निर्माण के लिए उसमें गति की आवश्यकता होती है। उपादान में गति प्रदान करनेवाली शक्ति को निमित्त कारण कहते हैं। कुम्हार चाक पर मिट्टी के लोंदे रखकर दंड से चाक घुमाते हुए उस लोंदे में गति प्रदान करता है जिससे मिट्टी को एक आकार मिलता है, और घड़ा बन जाता है। मिट्टी के स्वरूप में परिवर्त्तन होने पर घड़ा बनता है। अतः निमित्त कारण वह है जो उपादान कारण के स्वरूप में परिवर्त्तन लाता है। *अरस्तू* के अनुसार विश्वरूपी कार्य का निमित्त कारण ईश्वर है।

कुम्हार के मन में घड़ा का आकार बनता है, तभी वह चाक को घूमाकर मिट्टी से घड़ा बना पाता है। तात्पर्य यह है कि निमित्त कारण, जो चेतन सत्ता है, के मन में वस्तु का आकार बनता है और उस आकार के अनुरूप वस्तु बनती है। अतएव कार्य या घटना का आकारिक कारण भी होता है। *अरस्तू के अनुसार आकारिक कारण किसी कार्य का वह निश्चित आकार या रूप होता है जो उपादान को एक निश्चित दिशा में गति प्रदान करता है और जो निमित्त कारण के मन में रहता है।* कुम्हार के मन में घड़ा का आकार, बढ़ई के मन में कुर्सी या मेज का आकार इत्यादि आकारिक कारण हैं। वास्तव में जब हम किसी वस्तु का विश्लेषण करते हैं, तो उसमें दो बातें पायी जाती है — विषयवस्तु (content) और आकार (form)। घड़ा और सुराही दोनों का विषयवस्तु एक ही है — मिट्टी। पर दोनों के आकार भिन्न-भिन्न है। मेज और कुर्सी का विषयवस्तु एक है, पर उनके आकार अलग-अलग हैं। अलग-अलग आकार के कारण ही वस्तुओं के अलग-अलग नाम होते हैं। अतः विश्व का आकारिक कारण होता है, क्योंकि विश्व अलग-अलग वस्तुओं का समुच्चय है। विश्व का आकार ईश्वर के मन में होता है। अतः ईश्वर का मन विश्व का आकारिक कारण है।

किसी कार्य या वस्तु के निर्माण का कोई-न-कोई लक्ष्य या प्रयोजन होता है। जब कार्य या वस्तु बन जाती है तो उस लक्ष्य या प्रयोजन की पूर्त्ति हो जाती है। बढ़ई कुर्सी या मेज बनाता है, तो उसके पीछे उसका लक्ष्य होता है। कुम्हार घड़ा बनाता है, तो वह भी लक्ष्यविहीन नहीं होता है। जब घड़ा, कुर्सी या मेज बन जाता है, तो कुम्हार या बढ़ई का लक्ष्य पूरा हो जाता है। इसलिए इसे अन्तिम या लक्ष्य कारण कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, *लक्ष्य या अन्तिम कारण वह है जो किसी वस्तु या कार्य के निर्माण के पीछे का लक्ष्य होता है और जिसकी पूर्त्ति वस्तु या कार्य के सम्पादन से हो जाती है।* किसी कार्य या वस्तु का अन्तिम कारण ही उसके निर्माण की सारी क्रिया को एक निश्चित दिशा में प्रेरित करता है। कुर्सी, मेज या घड़ा का बन जाना ही अन्तिम कारण है, क्योंकि उसी ओर सारी क्रियाएँ प्रवृत्त थीं चाहे वह उपादान हो या निमित्त या आकार। इस प्रकार सारे कारण अन्तिम कारण से जुड़े हुए हैं। ऐसा लगता है कि *अरस्तू* ने *चार कारणों की एक शृंखला को ही कारणता की संज्ञा दी है।*

अरस्तू के द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त चार कारणों को गाणतिक सूत्र में इस प्रकार दिखलाया जा सकता है :—

$$M + E + F + F = M + (E + F^2) = C$$

M = उपादान कारण F = आकारिक कारण

E = निमित्त कारण F = अन्तिम कारण, C = कारण

अरस्तू ने इन चार कारणों में दो कारणों को मौलिक माना है, और दो कारणों को गौण स्वीकारा है। मौलिक कारण हैं — उपादान और आकारिक। इन्हें मौलिक इसलिए कहा गया है कि ये स्वतंत्र हैं, जबकि निमित्त और लक्ष्य कारण पराश्रित हैं। जबतक निर्माता के मन में किसी वस्तु का आकार नहीं उभरता है, तबतक उस वस्तु के निर्माण का लक्ष्य उसके पास नहीं होता है और लक्ष्य के बिना वह वस्तु को बनाने के लिए तत्पर नहीं होता है भले ही उसके पास उपादान मौजूद हो। कुम्हार या बढ़ई तभी घड़ा या कुर्सी बनाता है, जब उसके मन में घड़ा या कुर्सी का आकार बनता है और फिर वह घड़ा या